कभी न खत्म होने वाली खुशी को पाने का कोई शार्ट कट नहीं है।
– अज्ञात

टकराव के कई दौर देख चुके

अभी तेल की जगह प्राकृतिक गैस तनाव का मुद्दा बनी हुई है, जिसे लेकर पूर्वी भूमध्य सागर में तुर्की और फ्रांस के जंगी जहाज आमने–सामने आ गए हैं। ये दोनों देश नाटो के सदस्य हैं, लेकिन स्थानीय समीकरणों की जटिलता में उलझकर एक–दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं।

नवीन शाह।।

तेल से जुड़े हितों के इर्दगिर्द टकराव के कई दौर देख चुके खाड़ी क्षेत्र को अमेरिका के तेल निर्यातक बन जाने के बाद उम्मीद की एक किरण नजर आई थी। माना गया कि दुनिया की कूटनीतिक प्रौढ़ता से न सही, शेल ऑयल की मेहरबानी से ही यह इलाका चौन की सांस ले सकेगा। लेकिन व्यवहार में हुआ सिर्फ इतना कि टकराव के बहाने बदल गए। अभी तेल की जगह प्राकृतिक गैस तनाव का मुद्दा बनी हुई है, जिसे लेकर पूर्वी भूमध्य सागर में तुर्की और फ्रांस के जंगी जहाज आमने–सामने आ गए हैं। ये दोनों देश नाटो के सदस्य हैं, लेकिन स्थानीय समीकरणों की जटिलता में उलझकर एक–दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं।

तुर्की इस इलाके में ऑफ–शोर ड्रिलिंग को आगे बढ़ाने पर अड़ा है जबकि फ्रांस ने स्पष्ट कर दिया है कि अगर तुर्की ने विवादित क्षेत्र में ऐसी कोई गतिविधि शुरू की तो वह मूक दर्शक नहीं बना रहेगा। विवाद की जड़ पूर्वी भूमध्यसागर क्षेत्र में साढ़े तीन ट्रिलियन क्यूबिक मीटर (टीसीएम) गैस है, जिसमें 2.3 टीसीएम स्पष्ट रूप से इजिप्ट, इजरायल और साइप्रस के इकनॉमिक इंट्रेस्ट जोन में है।

आर्थिक संकट से जूझ रहे तुर्की को अपनी ताकत एक सदी पहले वाले स्तर तक लाने की संभावना इस गैस भंडार को हथिया लेने में ही नजर आ रही है। उसने लीबिया की सरकार से गैस बंटवारे का समझौता किया है और साइप्रस के तुर्क बहुल उत्तरी हिस्से पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति अपनाई है। मगर क्षेत्र के अन्य देश उसकी राह रोकने को तत्पर हैं।

ग्रीस, साइप्रस और इजरायल ने जनवरी में समुद्र के अंदर 1900 किलोमीटर की गैस पाइपलाइन बनाने का समझौता किया और इटली, जॉर्डन तथा फिलस्तीन के साथ मिलकर एक ब्लॉक भी बना लिया। फ्रांस ने इस ब्लॉक की सदस्यता के लिए आवेदन कर रखा है। इन सबका साझा मकसद तुर्की को यहां की गैस से दूर रखना है। समुद्री मामलों के अंतरराष्ट्रीय कानूनों को लेकर भी दोनों धड़ों की अपनी–अपनी व्याख्याएं हैं।

ग्रीस की दलील है कि हर छोटे–बड़े देश का अपनी समुद्री सीमा और आर्थिक क्षेत्र में अपना ड्रिलिंग राइट है, जबकि तुर्की का कहना है कि पूर्वी भूमध्य सागर के गैस वाले इलाके उसके कॉन्टिनेंटल शेल्फ में आते हैं, वहां किसी अन्य देश का कोई अधिकार नहीं है। तुर्की और चीन दुनिया के उन 15 देशों में हैं जो समुद्री कानूनों के यूएन कन्वेंशन को स्वीकार नहीं करते।

अब से तीन–चार दशक पहले तक समुद्र से जुड़े आर्थिक हित सिर्फ मछलियां पकड़ने और जहाजों की आवाजाही तक सीमित माने जाते थे। लेकिन अभी यह तेल–गैस और खनिजों के स्रोत के रूप में सबका ध्यान खींच रहा है। ऐसे में भूमध्य सागर हो या साउथ चाइना सी, हर जगह स्थितियां विस्फोटक हो रही हैं।

अच्छा होगा कि समुद्री हितों को लेकर समय से कुछ सर्वमान्य सूत्र खोज लिए जाएं, वरना कोई छोटी सी चिनगारी भी इनमें से किसी भी टकराव को बहुत बड़ा रूप दे देगी।

स्वच्छता और सुंदरता

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

आपके शरीर, कपड़े, घर और आसपास स्वच्छता और सुंदरता होना जरूरी है। स्वच्छता और सुंदरता का संबंध आपकी खुशी से होता है। जो लोग दिखने में सुंदर नहीं है वे खुद को हीन भावना से ग्रसित कर लेते हैं, जबकि ऐसा सोचने की बजाय यह सोचता चाहिए की मैं दूसरों से कितना अधिक स्वच्छ रह सकता हूं। जो लोग खुद को सुंदर नहीं मानते उनको अधिक तवज्जों नहीं मिलती। लोग उनकी ओर ध्यान नहीं देते। लेकिन हमेशा इस हीनता से ग्रसित होने के बाजाय यह सोचना चाहिए कि यह एक प्राकृतिक नियम है और मुझे इसके लिए दुखी नहीं रहना चाहिए, अन्यथा में जो जीवन मिला है उसे दुख में ही गंवा दूंगा।

संपादकीय

कंपनियों पर नजर

शेयर बाजार का मतलब सट्टा बाजार नहीं होता। पर अपने यहां आम बोलचाल में इसे अभी भी सट्टा बाजार कहा जाता है। यह सही है कि आज दुनिया में निवेश योग्य काफी धन अवसर तलाश रहा है और हमारे यहां भी शेयर बाजार की तेजी का एक कारण वह है। पर कोई भी निवेश बिना आर्थिक तर्क के तो नहीं हो सकता। और अगर बाजार के रुख पर रिजर्व बैंक के गवर्नर को, जो वित्त सचिव भी रहे हैं, भरोसा नहीं है तो साफ लगता है कि बाजार कुछ बड़े खिलाड़ियों के हाथ की कठपुतली बन गया है। वे सिर्फ नकली तेजी या गिरावट से माल बनाने में ही नहीं लगे हैं, उनकी नजर हमारी कंपनियों पर भी है। पहला शिकार बने मोबाइल के लगभग पांच दर्जन ऐप। कुछ ठेके भी रोके गए। कई अंतरराष्ट्रीय निविदाओं की शर्तें बदली गईं। उद्योग एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार संवर्द्धन विभाग ने पाकिस्तान और बांग्लादेश की जगह भारत की जमीनी सीमा से लगे सभी पड़ोसी देशों (पढें, चीन) से आने वाले निवेश पर निगरानी शुरू की। फिर यह चर्चा भी आई कि बाहरी देशों से संचालित साझा कोषों और निवेश फंडों के मार्फत चीन हमारी कंपनियों पर अपने दांत गड़ा रहा है। इसी के मद्देनजर अब व्यापार संवर्द्धन विभाग चीन से आए निवेश के कई बड़े प्रस्तावों पर सख्ती करता लग रहा है। इसलिए प्रत्यक्ष निवेश के फैसलों में जो सीधी पहचान के साथ आ रहा है उसके साथ तो सख्ती हो और जो पी–नोट्स जैसी अभी भी चल रही व्यवस्थाओं के माध्यम से पहचान छुपाकर बाजार का खेल खेल रहा है उसे खुली छूट मिली रहे, यह ठीक नहीं है।

कोरोना काल में यह अर्थव्यवस्था को जितना भी नुकसान पहुंचाता हो, इसके पीछे का सामान्य तर्क समझा जा सकता है। लेकिन सामान्य गणित से यह समझना मुश्किल है कि जब अर्थव्यवस्था के गिरने के चौतरफा संकेत हों।

सबसे बड़ी गुत्थी

अरविन्द मोहन।।

हिंदी सिनेमा का एक गीत है, 'आग लगे हमरी झोपड़िया में हम गावैं मल्हार, देख भाई कितने तमाशे की जिंदगानी हमार'। आजकल शेयर बाजार, सोने का भाव और बैंकों में जमा संबंधी आंकड़ों को देखकर यह गीत बार बार याद आता है। सोने के भाव और फिक्स्ड डिपॉजिट का बढ़ना तो मौद्रिक डर से जुड़ा है। कोरोना काल में यह अर्थव्यवस्था को जितना भी नुकसान पहुंचाता हो, इसके पीछे का सामान्य तर्क समझा जा सकता है। लेकिन सामान्य गणित से यह समझना मुश्किल है कि जब अर्थव्यवस्था के गिरने के चौतरफा संकेत हों और खेती छोड़कर किसी भी क्षेत्र का सहारा न दिखता हो, तब उस बाजार में किस उम्मीद से तेजी है, जो बजट के एक प्रावधान से या मानसून के समय पर आने, न आने से चढ़ता–गिरता रहा है। हालांकि रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास का मानना है कि बाजार में 'करेक्शन' निश्चित रूप से आएगा, लेकिन बताया नहीं जा सकता कि कब।

उदारीकरण ने कई पदों के अर्थ बदले हैं। करेक्शन भी उनमें से एक है। बाजार चढ़े तो टेक्निकल करेक्शन का मतलब वह नीचे आएगा। बाजार गिरे तब करेक्शन का मतलब है कि गिरावट कम होगी, बाजार कुछ चढ़ेगा। पर

दास बाबू का मानना है कि बाजार की मौजूदा तेजी का मतलब है, निवेशकों को भरोसा है कि बाजार में बिकवाली का बड़ा दौर नहीं आएगा, भले ही वह अभी अपने शीर्ष स्तर से आठ–नौ फीसदी नीचे है। असल में गुत्थी यही है कि जब बाजार अभी भी मार्च के या जनवरी के स्तर से नीचे है (और वह स्तर भी कौन से ठोस आर्थिक कारणों से बना था उसे समझना मुश्किल है) तब उसमें इस रफ्तार में पैसा क्यों लग रहा है?

अर्थव्यवस्था की दुर्गति जनवरी में भी दिखने लगी थी। भले ही तेल कीमतों में गिरावट के कारण व्यापार घाटा कम रहा हो और टैक्स बढ़ाते जाने से सरकारी राजस्व में ज्यादा कमी न दिखती हो, पर बाकी क्षेत्रों का हाल बुरा था। चारों तरफ के अनुमान बताने लगे थे कि अर्थव्यवस्था सिकुड़ने जा रही है। हालांकि ऐसा पक्के तौर पर नहीं कहा जा रहा था, लेकिन यह सभी मानने लगे थे कि जो सरकारी अनुमान बजट या रिजर्व बैंक वगैरह के माध्यम से सामने आ रहे हैं, वे पूरे नहीं होने वाले।

बहरहाल, अर्थव्यवस्था आज तो गोते खा रही है और उसकी सिकुड़न पांच फीसदी रहेगी या नौ–दस फीसदी, इस पर बहस चल रही है। कुछ क्षेत्र तो एकदम 'साफ' हो गए हैं। पर्यटन और विमानन के कारोबार, होटल और रेस्तरां का धंधा कब पटरी पर आएगा, इसका भरोसा नहीं। तब तक रेल से लेकर हवाई अड्डों तक क्या बचेगा, यह सवाल अलग है। सारे उदारीकरण और सारी न्यू इंडिया, मेक इन इंडिया, स्मार्ट सिटी योजनाओं के बाद भी आज सरकार से लेकर आर्थशास्त्री तक सभी मुक्ति की उम्मीद उस खेती–किसानी और पशुपालन से लगाए बैठे हैं जिसकी लगातार उपेक्षा होती रही है और जिसका जीडीपी में योगदान सिमटता ही गया है। जिन कंपनियों का बड़ा शोर था या है, उनके घाटे का रेकॉर्ड आतंक पैदा करता है। इनमें वोडाफोन, एयरटेल और बीएसएनएल या विमानन की चमकदार कंपनियां तो हैं ही, वे सारे बैंक भी हैं जिन पर हम आंख मूंदकर भरोसा करते आए हैं। किस ऑटोमोबाइल कंपनी और आईटी कंपनी में कितनी छंटनी हो रही है, यही चर्चा है। दूसरों की क्या कहें, मीडिया भी इससे नहीं बचा है। आर्थिक मंदी के चलते लगभग सभी मीडिया हाउस पस्त नजर आ रहे हैं।

सूडोकु नवताल-5459

मध्यम

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

Jagrutidaar.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5458 का हल

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9

अपना ब्लॉग

यूरोपीय मुल्क का खर्चा हमसे ज्यादा हो

मोहन। जब कोरोना बम फूटा तो बाजार स्वाभाविक रूप से धड़ाम हुआ। निवेशकों के कितने लाख करोड़ स्वाहा हुए, यह हिसाब यहां लगाने का लाभ नहीं। बाजार धीरे–धीरे धीरे होश में भी आने लगा। लेकिन तभी दूसरा बम फूटा कि चीन अपनी कुछ निवेश कंपनियों के माध्यम से सीधे या परोक्ष रूप से हमारे कुछ बैंकों समेत कई अच्छी कंपनियों के शेयर उठा रहा है क्योंकि बाजार में अभी सबसे कम कीमत पर इनके शेयर उपलब्ध हैं। हाय–तौबा मची। तभी चीन ने लद्दाख से लेकर अरुणाचल तक कई जगह घुसपैठ कर ली और हमारे सैनिक मारे गए। इस बार ज्यादा बड़ा शोर मचा।
चीन की सैनिक और कूटनीतिक घेरेबंदी के साथ आर्थिक घेरेबंदी शुरू हुई। इनमें 75 फीसद औरतें हैं। लेकिन कोरोना महामारी में मध्यवर्ग के बहुत से घर इन सहायक–सहायिकाओं के बिना चल रहे हैं। ड्राइवर, नैनी, कुक आदि की नौकरियां खत्म हो गई हैं।